# कृष्णा सोबती के उपन्यासों में चित्रित स्त्री–जीवन

ममता रानी
शोधार्थी,
मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग,
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर
**mamtajain19587@gmail.com**

डॉ. प्रदीप कुमार
शोध निर्देशक,
मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर

## *सारांश*

*कृष्णा सोबती आधुनिक हिंदी साहित्य की एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। उनके उपन्यासों में स्त्री को केवल एक 'वस्तु' या 'परंपरा की वाहक' के रूप में नहीं, बल्कि अपनी शर्तों पर जीने वाली एक स्वतंत्र इकाई के रूप में देखा गया है। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य कृष्णा सोबती के उपन्यासों (विशेषकर 'डार से बिछुड़ी', 'मित्रो मरजानी', 'जिंदगीनामा' और 'समय सरगम') के आलोक में स्त्री–जीवन के विविध आयामों, उसकी अस्मिता, देह की मुक्ति और पितृसत्तात्मक समाज के साथ उसके द्वंद्व का विश्लेषण करना है।*

***मुख्य शब्दः*** *कृष्णा सोबती, हिंदी साहित्य, सशक्त, हस्ताक्षर, उपन्यास, स्त्रीद्वंद्व, पितृसत्तात्मक समाज*

## 1. प्रस्तावना

हिंदी कथा साहित्य में कृष्णा सोबती का आगमन एक वैचारिक क्रांति के समान था। उन्होंने स्त्री–लेखन को घरेलू दायरे से बाहर निकालकर उसे मानवीय अस्तित्व के व्यापक धरातल पर प्रतिष्ठित किया। सोबती ने स्त्री के अंतर्मन, उसकी आकांक्षाओं, कामुकता और सामाजिक बंधनों के विरुद्ध उसके विद्रोह को जिस तार्किकता के साथ उकेरा है, वह हिंदी साहित्य में दुर्लभ है।

## 2. 'मित्रो मरजानी': देह की स्वायत्तता और विद्रोह

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में 'मित्रो मरजानी' (1966) मील का पत्थर है। नायिका 'मित्रो' का चरित्र पारंपरिक भारतीय नारी की परिभाषा को पूरी तरह नकारता है।

**देह की मुक्तिः**

मित्रो अपनी दैहिक इच्छाओं को छिपाती नहीं है। वह समाज द्वारा थोपी गई 'पतिव्रता' की नैतिकता को चुनौती देती है।

**पितृसत्ता का विरोधः**

मित्रो का विद्रोह केवल पुरुषों के प्रति ही नहीं, बल्कि उस पूरी व्यवस्था के प्रति है जो स्त्री को केवल उपभोग या सेवा की वस्तु मानती है। यहाँ सोबती स्त्री को 'शरीर के साथ मन की स्वायत्तता' प्रदान करती हैं।

## 3. 'डार से बिछुड़ी' और 'जिंदगीनामा': इतिहास और स्त्री

**डार से बिछुड़ीः**

इस उपन्यास में सोबती ने स्त्री के विस्थापन और उसके अनिश्चित जीवन को चित्रित किया है। यहाँ स्त्री पुरुष–प्रधान समाज में अपनी सुरक्षा और पहचान तलाशती है।

**जिंदगीनामाः**

'जिंदगीनामा' में सोबती ने पंजाब के ग्रामीण जीवन के माध्यम से स्त्री के सामूहिक और व्यक्तिगत संघर्ष को दिखाया है। यहाँ की स्त्रियाँ मिट्टी से जुड़ी हैं, वे परंपराओं का पालन भी करती हैं और अपनी सूझ–बूझ से परिवार का संचालन भी। सोबती दिखाती हैं कि स्त्री किस प्रकार सामाजिक जकड़न के बावजूद अपनी एक स्वतंत्र दुनिया बनाती है।

## 4. स्त्री–पुरुष संबंध का नया आयाम

सोबती के उपन्यासों में स्त्री–पुरुष संबंध 'स्वामी–सेवक' का नहीं, बल्कि 'समान धरातल' का है। उनकी स्त्रियाँ प्रेम में भी अपनी शर्तें रखती हैं। 'समय सरगम' में उन्होंने ढलती उम्र में स्त्री के अकेलेपन और उसके साहचर्य की तलाश को बड़ी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। वे दिखाती हैं कि स्त्री का जीवन केवल विवाह या मातृत्व तक सीमित नहीं है, उसकी अपनी व्यक्तिगत यात्रा भी है।

## 5. भाषा और शिल्प

कृष्णा सोबती की भाषा स्त्री–चेतना के अनुकूल है। उन्होंने पंजाबी मिश्रित हिंदी का प्रयोग करके पात्रों के आंतरिक आवेग को जो गति दी है, उसे 'सोबती–शैली' कहा जाता है। उनकी भाषा में स्त्री की तड़प, उसका आक्रोश और उसका आत्मविश्वास स्पष्ट रूप से झलकता है।

## 6. निष्कर्ष

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री 'अबला' नहीं है, बल्कि वह संघर्षशील और विचारशील है। सोबती ने स्त्री–जीवन के उन अनछुये कोनों को उजागर किया है जिन्हें तत्कालीन समाज ने वर्जित मान रखा था। उन्होंने स्पष्ट किया कि स्त्री की अस्मिता उसके स्वयं के निर्णयों में निहित है। निष्कर्षतः, सोबती का स्त्री–विमर्श केवल अधिकारों की मांग नहीं, बल्कि 'मानवीय गरिमा' की स्थापना है।

## *संदर्भ ग्रंथ सूची*

*सोबती, कृष्णा, 'मित्रो मरजानी', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1967*
*सोबती, कृष्णा, 'जिंदगीनामा', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्लीए 1979*
*सिंह, नामवर, 'दूसरी परंपरा की खोज', राजकमल प्रकाशन 2002*
*वर्मा, निर्मला, 'आधुनिकता और हिंदी साहित्य', साहित्य अकादमीए 2006*
*कपूर, मोहनलाल, प्रमुख हिंदी उपन्यासः एक विश्लेषण. नेहा प्रकाशन, 2005*
*वासमेह, शहेनाज जाफर, कृष्णा सोबती का कथा साहित्य एवं नारी समस्याएँ. अभय प्रकाशन, 2009*
*विभिन्न शोध पत्रिकाएँ – 'हंस', 'समालोचन', 'आलोचना' आदि में प्रकाशित लेख।*